International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(V), January - March, 2024, pp. 45-47

भारतीय संस्कृति में धर्म चरः का बदलता स्वरूप

Shaktisinh Ajitsinh Gohil*

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की श्रेष्ठ संस्कृति है इस श्रेष्ठता हमारे शास्त्र मान्य बोध वचन जैसे आभूषण से मिलती है। साधारण शब्दों में धर्म के बहुत से अर्थ है। जिनमें से कुछ यह है कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सद आचरण सदगुण आदि। धर्म का शाब्दिक अर्थ है धरियाती इति धर्मः। अर्थात जैसे सबको धारण करना चाहिए यह मानव धर्म है। धर्म एक परंपरा को मानने वालों का समूह है। ऐसा माना जाता है कि धर्म मानव को मानव बनता है।

धर्म मनुष्य जीवनका महत्व क्या है उसे स्पष्ट करता है ।पवित्र भावनाओं को पैदा करता है एवं मानसिक तनाव एवं चिंता से दूर रखकर व्यक्तित्व के व्यक्तित्व का विकास करता है एवं उसे सुख समृद्ध हेतु धार्मिक नियमों के अनुरूप आचरण के लिए प्रेरित करता है।

हमारी ऋषि परंपराने हमें यह बौद्ध वचन दिए है। हमें उसका अनुचरण करके और अपने जीवन की क्रियाकलाप में उतारने का मौका मिला है। अगर हम हमारी संस्कृति की धरोहर को संभाल के रखना चाहिए यह वचन हमारे लिए बहुत उपयोगी एवं जरूरी है।

- मातृदेवो भवः
- पितृदेवो भवः
- आचार्य देवों भवः
- अतिथि देवो भवः
- सत्यम् वदः
- धर्म चरः

इन बोध वचन में से आज धर्मचरः पर अपना विचार आपके सामने रखने का प्रयत्न करते हैं।

धर्म चर

प्रथम धर्म शब्द सुनते ही हमारी नजर के समक्ष हिंदू, मुस्लिम, क्रिश्चियन, बोध, पारसी जैसे धर्म आते हैं। लेकिन यह धर्म शब्द दूसरी बार हमारे समक्ष आता है तब कर्मकांड आता है,मंदिर, पूजा पाठ अगरबत्ती, भजन, आरती, प्रसाद एवं यज्ञ उत्सव उल्लास आता है।लेकिन यह हमारी धार्मिक क्रिया है या धर्म इसके ख्याल हमें स्पष्ट नहीं होता। तीसरी बार धर्म शब्द हमारे सामने आता है तभी धर्म को हम वेशभूषा के लिए पहचानते हैं। ललाट पर किया हुआ तिलक,हस्त कमल में माला, शरीर पर भगवा वस्त्र एवं मुख में श्लोक उसे हम धार्मिक कहते हैं। जिसका बड़ा तिलक वह सबसे ज्यादा धार्मिक हम ऐसा समझते हैं। कभी–कभी उसे व्यक्ति के कर्म को

* Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharajkrishnkumarsinhji Bhavnagar University, Gujarat, India

The paper was presented in the National Multidisciplinary Conference organised by Maharani Shree Nandkuverba Mahila College, Bhavnagar, Gujarat on 21st January, 2024.

देखकर धर्मिक बताते हैं जैसे हम व्यसन नहीं करते हैं तो हम धार्मिक है। हम चोरी नहीं करते हैं तो हम धार्मिक है। हम सत्य नहीं बोलते हैं तो हम धार्मिक है ।और धार्मिक व्यक्तियों के लिए कल्पनाएं की जाती है।तो क्या हम धर्म चरः समझने के लिए धर्म की शास्त्रीय व्याख्या क्या है उसे समझना चाहिए।यह सब कर्मकांड एवं पूजा धर्म नहीं है लेकिन धर्म का एक अविभाज्य अंग है उसके बिना धर्म अधूरा है लेकिन लेकिन पूर्ण नहीं है। हमें धर्म का स्वरूप देखना चाहिए।

धर्म क्या है और धर्माचरः क्या है?

अहिंसा परमो धर्म, दया धर्म का मूल है।ऐसा हम सुनते हैं उनके साथ पुत्र धर्म, पति धर्म, राष्ट्र धर्म जैसे शब्द भी सुनने को मिलते होंगे।इन सभी बात सुनने से स्पष्ट होता है कि धर्म हमारे कर्तव्य के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। जीवन के सब पहलू में मुझे क्या करना चाहिए मेरा कर्तव्य क्या है ऐसा विचार करना और यह विचार को हमारे आचरण में स्थान देना चाहिए और हमारा आचरण यह दिशा में आगे बर्ढ तब हम कह सकते हैं कि यह हमारा धर्म चरः है।

धर्म के लिए हमें अपने कर्तव्य को समझाना पड़ेगा मेरा कर्तव्य क्या है।उसे पर प्रतिदिन विचार करना चाहिए उसको गहनता से अगर हम अध्ययन करेंगे तो हम धर्म की सही और गलत बात की समझ मिलेगी क्या सही है और क्या गलत है। विभिन्न परिस्थिति में क्या योग्य है और क्या अयोग्य है ऐसा विचार करना चाहिए जो हमारे लिए करने योग्य है उसे ही करना चाहिए हमारे संस्कृति के लिए जो योग्य है उसे अपनाना चाहिए और अयोग्य है उसे छोड़ना चाहिए इसे कहते हैं धर्माचरः

अगर कहा जाता है कि योग्य और अयोग्य की समझ मनुष्य की अपनी ताकत है।वह तय कर सकता है की मेरे जीवन में योग्य क्या है, मेरा कर्तव्य क्या है। उसका विचार करेंगे तो हम अपने जीवन को एक नया आकर दे सकते हैं।जैसे कि यह समय बहुत अध्ययन करना जरूरी है या खेलना, इस विषय पर माताजी की बात सही है या पत्नी की, टैक्स बचाने के लिए बाजार से चीज बिल बिना खरीदे या बिल के साथ, यह योग्य है कि यह अयोग्य जब हमें निर्णय लेना पड़ता है तब हमें यह सही गलत की समझ धर्म से मिलती है।

व्यक्ति को सोचना चाहिए कि इस मनुष्य जन्म हमें मिला है तो यह जन्म में मेरे लिए सही क्या है कौन सा वह काम है कौन सा वह विचार है, हमें यह जन्म में नहीं लेकिन आने वाले जन्म के लिए कल्याणकारी है। उसके लिए महर्षि व्यास ने कहा है धर्म इहलोक एवं परलोक का कल्याण करता है। वह धर्म है धर्म हमारे जीवन के सौंदर्य, मंगलता,दिव्यता और भव्यता लाता है उसे धर्म कहा जाता है।दुःख के वक्त उसका सामना करने की ताकत प्रदान करें एवं हर संकट में मनुष्य को खिलता एवं हंसता रखें यह धर्म है।

व्यक्ति एवं समाज वर्तमान जीवन को सुचारू एवं दीर्घकाल से आगे जन्म जन्मांतर तक व्यक्ति एवं पीढ़ीयो का समाज निरंतर विकासता रहे उसके लिए हमारे ऋषियोंने हमें वर्णव्यवस्था एवं आश्रमव्यवस्था प्रदान की है उसमें उच्च नीच नहीं है लेकिन समाज के विविध समुदाय सुसंवादिततो होता है उनके साथ व्यक्ति के जीवन में भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का अध्ययन होता है। इस आधुनिक वाद के नाद में हम अपना शास्त्र धर्म समझने में प्रयत्न करता चाहिए।

आज हम सब युवावस्था में है हमारे जीवन में धर्म र्चःकिस प्रकार हो सके यदि हम एक अध्यता है तो हमे सही अर्थ में एक अच्छा अध्यता बनना चाहिए।श्रीमद् भागवतगीता में पुरुषोत्तम नारायण भगवान कृष्ण ने कहा है कि विद्यार्थी जिज्ञासु एवं नम्रता एवं दुःखी लोगों की सेवा करनी चाहिए। इस विषय में गहन अध्ययन करके हमारी संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके ऐसी शिक्षा लेनी चाहिए उनके साथ–साथ हमें जीवन को रास्ता मिले,हमारे जीवन को गति मिले, ऐसी विद्या प्राप्त करने के लिए शारीरिक मानसिक एवं भौतिक रूप से सशक्त रहना चाहिए।

हमारे कुटुंब कृष्णम वंदे जगत गुरु एवं देवकी परमानंद को नजर समक्ष रखकर अपने व्यक्तित्व को अपने इन भारतीय आदर्शों से भरना चाहिए जैसे अभिमन्यु ने अपने पिता अर्जुन लक्ष पूर्ण करने हेतु अपना

बलिदान दिया वैसे मुझे भी सम्यक तनोती ईती संतान का सार्थक करने हेतु अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। पिता का लक्ष लक्ष्य पूर्ण करना पुत्र का सबसे महत्वपूर्ण धर्म है उनकी परंपरा को आगे बढ़ाना हमारे ऋषियों ने बताए हुए रास्ते पर चलना हमारे देश के सभी नागरिक कर्तव्य होना चाहिए।

उद्देश्य

- **भातृ धर्म**

हमारे समाज में आज दो भाइयों के बीच स्वार्थ एवं उपयोगिता का संबंध शेष रहा है।तब हमें निस्वार्थ प्रेम एवं त्याग से परिपूर्ण ऐसे राम एवं लक्ष्मण के भाव संबंध को याद करके हमारे व्यक्तित्व का अंग बनाना चाहिए यही हमारा भतरा धर्म है।

- **मित्र धर्म**

मित्र धर्म की बात कर तो आज जब मित्रता धर्म में भी हमारा संबंध फायदा एवं स्वास्थ्य तक सीमित है। तब हमारे आदर्श एवं मार्गदर्शन कृष्ण सुदामा ।,राम सुग्रीव की दैवी मित्रता एवं बंधुता को याद करना चाहिए किसी के सुख एवं दुख में समरस होकर दैवी मित्रता निर्माण करेंगे तभी सही अर्थ में मित्र धर्म निभाने का गौरव हम प्राप्त कर सकेंगे।

- **युवा धर्म**

अगर हम युवा धर्म की बात करें तो हजारों वर्षों से प्राचीन एवं भव्य वैदिक संस्कृति जब पतन की ओर आगे चल रही है तब उसे पुनः नया पल्लवीत करने का हमें संकल्प करना चाहिए। वह संकल्प आज के भोगवाद और आधुनिकता के बाद के समय में जो कर सकता है वह युवान है।युवान से हमारी संस्कृति को आशा है कि वह उन्हें जीवित करें उसका आरक्षण एवं समर्थन करें तब युवा धर्म कहता है हम करेंगे, हम बनाकर ही बताएंगे, हम बदल देंगे ऐसा संकल्प यदि भारतीय युवान करेगा शिक्षा के माध्यम से हम यदि ऐसी शिक्षा प्रदान करेंगे तब सही अर्थ में धर्माचर्रःका महत्व एवं मूल्य होगा।

उपसंहार

भोगवाद में फंसे युवा को हमारे सनातन धर्म समझाएंगे तभी भक्ति एवं आध्यात्मिक पर लगे हुए अंधश्रद्धा एवं भोगवादका आवरण हटाएंगे युवा को भगवत मार्ग पर चलाएंगे तभी एक सुसंस्कृत समाज निर्माण कर पाएंगे यही है युवा धर्म, यही है धर्म का स्वरूप। मनुष्य की धर्म की बात करें तो अग्नि का धर्म है उष्णता, पानी का शीतलता वैसे ही मनुष्य का धर्म है मनुष्यतत्व इस मनुष्यत्वमें चार बाबतों का समावेश होता है में मनुष्य तत्व धर्म को विस्तार पूर्वक बताना चाहता हूं कि यदि हम हमारे जीवन में कृतज्ञता आएंगी अगर हम धर्म के आधार पर अस्मिता एवं भावमयता लेंगे हम हमारे देश के कार्य में कार्य प्रवीणता लायेंगे और धर्मचरः का सही रूप समझेंगे तो हम हमारे ऋषि एवं कृषि संस्कृति की दिशा प्रदान करने वाली हमारी भारतीय संस्कृति में धर्म के वैदिक समाज को समझने का प्रयास करेंगे। अगर हमें आज धर्म का विभिन्न रूप वह देखने को मिलता है कि हमारे समाज में लोग अधिक से अधिक धर्म का धर्मचरः का आचरण करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृति पूजन

❖◆❖